सूरदास के काव्य सूरसागर में ग्राम्य जीवन

डॉ. ऊषा रानी मलिक
शिक्षा विभाग
महाराजा सूरजमल संस्थान,
सी.–4, जनकपुरी, नई दिल्ली–58

सारांशिका

'सूर सागर' में वर्णित ब्रज का जन–समाज एकदम ग्रामीण जीवन है। सूरसागर में नागरीय उच्च समाज मथुरा और द्वारिका से सम्बन्धित स्थिति का चित्रण बहुत कम हुआ है। ब्रज–समाज का प्रतिनिधि परिवार है – नन्द का परिवार जिसमें केन्द्रीय धुरी हैं बालक सरवा और युवक श्री कृष्ण। पिता–माता, 'नन्द–यशोदा', भाई बलराम–कृष्ण, सखा–पड़ोसी गोप समाज, प्रेयसी औरराधा तथा गोपियाँ आदि सभी इसमें सम्मिलित हैं जिनका व्यवहार प्रदर्शित हो रहा है।

महाकवि सूर लोक–कवि थे। उन्होंने समकालीन लोक–जीवन के हृदय की एक–एक धड़कन को सुना, बन्द आँखों से भी सब कुछ देखा–परखा, लोक–जीवन और उसके विविध पक्षों के रंग–बिरंगे चित्र उरेहे तथा सब मिलाकर एक यथार्थपरक आदर्श जन–समाज की व्यापक परिकल्पना को साकार किया। एकदम सच तो यह है कि इसी अद्‌भुत कौशल के फलस्वरुप उनका काव्य ''लोक–जीवन की सच्ची कहानी–ऐसी कहानी जिसमें जीवन का निष्कपट अभिव्यन्जन हुआ है।

मुख्य शब्द : काल, सूरसागर, ग्राम्य जीवन, वर्णाश्रम धर्म, अनुष्ठान।

वस्तुतः महाकवि सूरदास के काव्य में ग्राम्य जीवन चित्रित हुआ है। ग्राम्य जीवन की लोक परम्पराएँ, मान्यताएँ एवं अनुष्ठान की झाँकी दिखलाई देती है। इसमें जाति से मुख्यतः अहीर, व्यवसाय से कृषि प्रधान एवं मान्यताओं से एकदम सरल सहज ग्रामीण जो परम्परागत रीति–रिवाजों और अन्ध विश्वासों का अनुयायी होता है। यहाँ कृष्ण और उनका समस्त परिवेश इसी प्रकार का है। एक ओर तो इस समाज में ऋषि देव इन्द्र और गोवर्धन की पूजा प्रचलित है क्योंकि 'इन्द्र बड़े कुलदेव हमारे, 'कुलदेवता हमारे सुरपति', 'सब देवनि कौ देवता गिरि गोवर्धन राज है' तो दूसरी ओर विविध अन्ध विश्वास ('सत संयम तीरथ व्रत कीन्हें, तब यह सम्पत्ति पाई, प्रकट भयौ पूरब तप कौ फल सुत मुख देखो आइ', 'नान्दी मुख पिवर पुजाइ अन्तर सोच हरे')। इसलिए ग्रीष्म ऋतु में बगुले का भूत, हाऊ का भय, नजर लगना तथा पुत्र की दीर्घायु– कामना से रैंता, पैंता, मनसुखा जैसे नाम रखना भी इसी परम्परा की स्थितियों को दर्शाते हैं। इसी तरह से शकुन–अपशकुन का एक उदाहरण देखिये –

''मंजारी आगे है आई पुनि फिरि आंगन आई।.....
बांए काग, दाहिने खर–स्वर, व्याकुल घर फिरि आइ।
''देखे नन्द चले घर आवत।
पैठत पौरि छींक भई बांए, दाहिनै धाह सुनावत।।
फटकत स्रवन स्वान द्वारे पर, गररि करति लराई।
माथे पर है काग उड़ान्यो कुसगुन बहुतक पाई।।''

सूरसागर

यहाँ पर काग का बोलकर उड़ जाना, भ्रमर की गुनगुनाहट, भुजा फड़कना, पुलकित होकर अंगिया का तड़कना, आँख फड़कना तथा काग का सन्देशवाहक होना इत्यादि इसी प्रकार के कुछ ग्राम्य जीवन के प्रमाण हैं। पति–प्राप्ति के लिये गोपियों का शिव एवं सूर्य की उपासना करना, राधा का कृष्ण–प्राप्ति हेतु देवी की आराधना करना तथा बाल कृष्ण का चन्द्रमा को 'मामा' ऐसी ही कुछ परम्परागत मान्यतायें हैं। इतना ही नहीं बल्कि जादू भरे टोने–टोटके भी 'सूर सागर' में कम नहीं हैं। यशोदा के वात्सल्य रहना पदों में यह सभी मिलते हैं जैसे– 'राई लोन उतारना', 'डीठि लगना और उससे बचने हेतु माथे पर मसि–बिन्दा लगाना, कंठ में कठुला और केहरि नख धारण कराना, दिशा शूल ''परिवा पिय चलियैं नहीं होरी हारी है'। जन्म–मन्त्र कराना, सर्प–विष दूर करना, ठगौरी लगाना वशीकरण तथा डाकिनी मन्त्र पढ़ना आदि। सत्यता यह है कि ''सूर सागर में विश्वास और अनुष्ठानों के माध्यम से लोक–जीवन के जिस सुकोमल पक्ष का शिक्षण हुआ है, वह लोगों की हृदयगत भावनाओं एवं निष्ठाओं का सफल एवं मोहक चित्रण है। ..... तात्कालिक अन्ध विश्वास ग्रस्त समाज जीवन को विचित्र दृष्टिकोण से देख रहा है, जिसकी प्रत्येक चितवन में भोलापन है, प्रत्येक विचार से सरलपन है और प्रत्येक योजना में विवशता का विकर्षण है। सांस्कृतिक विकास के साथ–साथ पुरातन परम्पराओं का अनुसरण, अनुष्ठान के प्रति गहन मोह तथा सनातन विश्वासों को उसी पुराने दृष्टिकोण से देखना ब्रज–लोक–जीवन की प्रमुख विशेषताएँ हैं।''[1] वास्तव में सूर के पदों में ''व्यक्ति आत्म समर्पण कर विहल हो जाते हैं।''[2]

ग्राम्य जीवन में लोक जीवन के बाह्य पक्ष में समाज का स्वरुप, भोज्य पदार्थ, वेश–भूषा, साज–सज्जा, मनोरंजन के साधन, प्रकृति–परिवेश तथा सामान्य रहन–सहन आदि चित्रण किया गया है। सूर काव्य–विशेषतः 'सूर सागर' – इन सभी से परिपूर्ण है जो ग्राम्य जीवन के परिवेश को चित्रित कर रहा है।

समाज में वर्णाश्रम धर्म का पूरा स्वरुप विद्यमान है क्योंकि आवश्यकता के अनुसार यहाँ ब्राह्मण–पुरोहित, व्यापारिक वैश्य, उद्धव जैसे ज्ञान गठरी की खेप लादकर चलते फिरते सामयिक व्यापारी, बढ़ई, सुनार, रंगरेज, दरजी, गधी, माली, कुम्हार आदि सेवक तक सभी हैं। यहाँ पर प्रमुखता अहीरों की है जो 'हम सब

अहीर जाति मति हीनो', 'अहीर जाति कोऊ न पत्याई', 'निठुर अहीर की जाति', 'अहीर जाति सब एक' तथा 'अहीर जाति गोधन को माने' वाले हैं। गोचारण हो या गोवर्धन–पूजा अथवा कृष्ण–वियोग, हर दशा में सब एक हैं। वस्तुतः आर्थिक दृष्टि से अधिकांशतः मध्यमवर्गीय, गोधन के इच्छुक, नारी स्वातन्त्र्य के समर्थक और जीवन का खुला उपभोग करने वाले, अतिथि से लेकर देवी–देवताओं तक का आदर करने वाले, छल–कपट से राही तथा सब मिलाकर 'सादा जीवन उच्च विचार' के साकार रुप को चित्रित करते हैं।

समाज के नाना भोज्य पदार्थों की नाम–गणना कवि सूर ने नाना स्थलों पर करायी है। इनमें भी प्रमुख स्थल है ज्योनार पर्व, जन्मोत्सव आदि। इनमें कवि सूरदास ने एक ओर तो सर्वप्रचलित खाद्य पदार्थ फलादि लिये हैं तो अनेक स्थानीय पदार्थ भी बताये हैं।जैसे खुरमा, लौंग से बने खीर लड्डू, गूझा, सफरी चिउरा, तरबूज की मींग, लुलुई, लपसी, खाजा, पतवरा, निमोना, बनकौरा, महेरी, तला, मक्खन, सुरन, डमगोरी आदि भोज्य पदार्थों का चित्रण किया है।

समाज में स्त्री–पुरुषों की वेश–भूषा तत्कालीन वातावरण और परम्परा के आवश्यकता के अनुसार है। बालक कृष्ण के सौन्दर्य–वर्णन में कवि यदि कुलही और चौतनी, टोपी, पीत झंगुलिया, पिच्छौरी, निचोल तथा बागे चीर आदि वस्त्रों के चित्रण किया है, तब युवा कृष्ण के सौन्दर्य–वर्णन में पाग (पगड़ी), पीताम्बर, धोती, उपरैना, गोमावल आदि का चित्रण किया है। इसी प्रकार स्त्रियों की वेश भूषा प्रायः साड़ी–कंचुकी, फरिया, लहंगा, चूनरी, तिपाड़ लहंगा आदि बताये जिनमें से अधिकांश आज भी वहाँ पर प्रचलित हैं क्योंकि आज भी स्त्रियों के सर्वप्रिय परिधान हैं। देखा जाए तो सूरसागर के सम्बन्ध में ठीक ही लिखा है कि ''सूर बाल हृदय का ही नहीं मातृ हृदय का भी कोना–कोना इनका आप्त है।''[3]

कवि सूरदास तत्कालीन समाज की आभूषण प्रियता को भी नहीं भूला है निःसन्देह ब्रज समाज में स्त्री, पुरुष और बच्चे सभी आभूषण धारण करते थे। सूर ने पुरुष–समाज में प्रयुक्त आभूषण बताये हैं–कुण्डल, गलहार, नूपुर, किंकनी, बाहुभूषण, नथुनी, पुष्प माल, पहुँची, कठुला, लटकन, पेजनियाँ, चूरा, मुकुट, गैज माल तथा मोर मुकुट। इसी तरह दो स्त्रियों के बहुत प्रिय आभूषण हैं–हार, कंकन, चुरी, किंकनी, नूपूर, पैंजानि, बिछिया, ताटंक, बेसरि, सिरि, दुलरी, तिलरी, (दोहरी–तिहरी माला) मोती हार, जड़ाऊ अंगिया, बलय (बाजू बन्द), श्रीमाल, तौकी, पहुँची, मुद्रिका, मुक्ति माल, मणि, सीस फूल, टीका, नथ, झुमका, तार, खुटिला, (कर्ण फूल), तरिवनि, हमेल, चौकी, खुम्भी (नाक की लौंग), टंड़िया, आरसी, (अंगूठे का आभूषण) तथा चम्पाकली इत्यादि'सूर सागर' में कवि ने साज–सज्जा के कई तरीके भी बताये हैं जैसे शरीर पर वन धातु के चित्र, गोरोचन–रोली–चन्दनादि का तिलक, बिन्दी, काजल, केसर–चन्दन की खौरी, गन्ध, मृगमद, सिन्दूर, माँग भरना, जावक तथा वेणी आदि। यहाँ तक की सुगन्धमय साड़ी तथा कानों में इत्र लगाने–डालने 'सुगन्ध पुढ़े स्रवननि चुवै मदमाति हो' एवं फलों से बाल गूंथने ('गूंथे सुमन रसालहि') तक को चित्रण किया है। ''उस युग के, ब्रज प्रदेश के स्त्री–पुरुष फैशन प्रिय थे। उन्हें फैशन बनाने के अनेक साधन उपलब्ध थे। उन्होंने जीवन के चारों ओर बिखरे हुए प्रचुर उपकरणों में से फैशन के उपकरणों का बुद्धिमानी के साथ चयन कर लिया था।''[4]

सम्भवतः एक हजार वर्ष के हिन्दी–साहित्य में सूर की समता करने वाला कोई कवि नहीं है।.....उनका सूर सागर ब्रज जीवन की सभी विशेषताओं को लेकर काल के पट पर सदैव के लिये अमिट चिन्ह बन गया है।कृनिर्विवाद रुप से सूर सागर लोक–जीवन का वृहद् कोश है।''[5] ध्यान से देखें तो ''ब्रज प्रान्त की सामाजिक परिस्थितियों का जितना विस्तृत वर्णन हमें सूर के काव्य में मिलता है, उतना किसी भी इतिहास ग्रन्थ में नहीं मिलता।''[6]इनसे दो मत नहीं है कि ''सूर को पाकर ब्रज की संस्कृति और ब्रज–संस्कृति को पाकर सूर धन्य हो गए।''[7] बल्कि ब्रज भूमि की संस्तुति में मानों मोहक बन गई।''

<u>सन्दर्भ सूची</u> :–

1. डॉ. हरदयाल – सूरसागर में लोक जीवन पृष्ठ – 121
2. नलिनी मोहन सान्याल – भक्त शिरोमणि महाकवि सूरदास पृष्ठ–285
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी – सूर साहित्य पृष्ठ – 122
4. डॉ. हर गुलाल – सूरसागर में लोक जीवन पृष्ठ – 173 – 174
5. डॉ. हर गुलाल पृष्ठ – 174
6. डॉ. हरवंश लाल शर्मा – सूर और उनका साहित्य पृष्ठ – 12
7. डॉ. मुन्शी राम सोम – सूरदास पृष्ठ – 222